International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-11-2020; Accepted: 16-11-2020; Published: 02-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 111-115

अनामिका के 'अवांतरकथा' उपन्यास में नारी चेतना

कंचन टी.जी

सहायक प्राध्यापक, विद्यावर्धका प्रथम दर्जा कॉलेज, मैंसूरु, कर्नाटक, भारत

सारांश

चेतना मनुष्य का प्रमुख गुण है चेतना यानि व्यावहारिक ज्ञान यह ज्ञान परिवर्तनशील और प्रवाहमान होता है। यह चेतना हमारे जीवन में सहगामी होती है क्योंकि यह हमारे जीवन अनुभव से जुडी रहती हैं इसलिए इसे हम व्यक्तिगत अनुभव कहते हैं। इस प्रकृति की एक अद्भुत मानव जाति है नारी जो हमेशा अपने अधिकारों के प्रति जागृत और सचेत रहती है, इसी भाव को नारी चेतना कहा जाता है। नारी इस सृष्टि की एक अद्भुत सृष्टि है जो चेतनशील, सेवामय, ममतामयी, सहनशील, कर्त्तव्यपरायण, स्वाभिमान और विवेकशील होती है। वह अपने परिवार ही नहीं अपितु अपने आस-पास के लोगों के दुख को दूर करनेवाली सहायिका भी होती है। इन भावों और विचारों से ओत-प्रोत नारियों का चित्रण 'अनामिका' ने अपना उपन्यास 'अवांतरकथा' के माध्यम से समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

मूल शब्द: चेतना, नारी चेतना, सेवामय, ममतामयी, कर्त्तव्यपरायण, विवेकशील

प्रस्तावना

'चेतना' शब्द 'चेत' [1] शब्द चेतस् का पर्याय है इसे संस्कृत से ग्रहण किया गया है। 'चेतना' [2] शब्द का प्रायोगिक अर्थ है ज्ञान, बुद्धि, जीवन और चेत। संस्कृत में यह शब्द आत्मा, जीवन, परमात्मा, मनुष्य, प्राणी, मन आदि के रूप में प्रयुक्त होता है। मानव चिंतनशील प्राणी है और वह जीवन भर चिंतन करता रहता है उसके चिंतन द्वारा ही उसके मन में चेतना जागृत होती है। साथ ही उसके जीवन को गति और दिशा प्राप्त होती है।

हिंदी में 'चेतना' शब्द का अर्थ है मनोवृत्ति, बुद्धि। समझ, होश-हवास, स्मृति, याद आदि। अंग्रेजी में इसका पर्याय शब्द है [3] और इस शब्द का अर्थ है अर्थात् अपने आसपास के वातावरण को समझने और उसकी बातों को अवलोकन और मूल्यांकन करने की समझ या शक्ति ही चेतना है।

'नारी चेतना' का मतलब है नारियों में जागृति और अपनी सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता । यह नारी-चेतना सामाजिक चेतना है जो नारी स्वतंत्रता की ही बात कहती है। जब नारी अपनी जीवन में स्वयं निर्णय-फैसला, पसंद-नापसंद, सही-गलत, क्या करना है, ना करना है सब स्वयं चुनती है और अपनी जीवन की सार्थकता को स्वयं समझती है तो यही नारी चेतना है। आज नारी में चेतना जागृत हुई है तो इसके लिए मुख्य कारण है शिक्षा, और 17-18वीं शताब्दी में पश्चिम में निर्माण हुआ 'नारी मुक्ति' आंदोलन ।

साहित्य में 'नारी चेतना' का मतलब है कि साहित्य के द्वारा जब साहित्यकार समाज में नीहित रूढ़ि, परंपरा, अंधविश्वास, अज्ञान, नारी के प्रति अन्याय, उसके दुःख-दर्द पीड़ा, उसके अधिकार के प्रति सचेत आदि

भावनाओं को व्यक्त करके नारियों में जागृति का शंख फूँकना ही है। आधुनिक वैज्ञानिक युग ने नारी को पुरुष के साथ खड़ा किया है। आज नारी में सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक और वैयक्तिक जागृति का विकास हुआ है। नारी ने सदियों पहले स्वतंत्रता, शिक्षा, समानता की माँग की थी। लेकिन पुरुष प्रधान समाज ने नारी की आवाज़ को दबा दी । नारी चेतना को जागृत करने का श्रेय पाश्चात्य देश को जाता है। 18वीं शताब्दी का अमेरिका का नारी मुक्ति आंदोलन केवल अमेरिका ही नहीं बल्कि विश्व भर में प्रसिद्ध है, कारण इसे 'मताधिकार आंदोलन' माना गया है । 1830 में अश्वेत गुलाम स्त्रियों ने 'गुलाम प्रथा' के विरोध में खुलकर आवाज़ उठायी । इनमें से 'साराह' और 'एंजीलाग्रीमा' का नाम प्रमुखतः लिया जाता है। 'साराह' ने अपने जीवन-चरित्र में कहा है "पुरुष वर्ग ने स्त्री वर्ग पर अपने पति होने का नाजायज फायदा उठाया है, जिस कारण स्त्रियों को समानता के दर्जे में रखने के बदले उन्हें अधीन रखने का प्रयत्न किया है जिस कारण स्त्रियाँ भी अपने स्वतंत्र अस्तित्व, स्वतंत्रता, नैतिकता आदि को पुरुष रूपि पति दृष्टिकोण से देखने लगी।" [4] सन् 1840 में 'एंटी स्लेवरी कन्वेंशन' की स्थापना हुई इसमें आवाज़ देने वाली महिलाएँ थी इलीजाबेथ कंडी स्टानर्टान, लूसीरी टीप (सूसान बी. एंरोबी) । इसी दौरान सन् 1840 में 'विरल गुलाम प्रथा उन्मूलन सभा' का आयोजन लंदन में हुआ। इस सभा में महिलाओं का अपमान हुआ था इसलिए 14 जुलाई 1848 में 'सीनेका कोउटरी कौउरीढार' में तीन सौ महिलाओं ने भाग लिया। माना जाता है कि इसी आंदोलन के फल स्वरूप स्त्री जागृति (चेतना) का इतिहास शुरु हुआ। फलस्वरूप 1856 में पहली बार स्त्री को कानूनी अधिकार मिला।

नारी चेतना के विकास के पीछे तो प्रेरक आंदोलन ये वे हैं अमरिका का नारी मुक्ति आंदोलन और 1830 का गुलाम प्रथा आंदोलन । इसके अलाव प्रेरक ग्रंथ है सिमोना द बुआर की 'द सेकण्ड सेक्स', बेट्टी फ्राइडन की 'द फेमिनिन मिस्टिक'।

भारत में नारी चेतना का जागरण भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन से हुआ, इसके कर्त्ता-दर्ता है, राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मागांधी आदि। इन महा-पुरुषों ने स्त्री शिक्षा, नारी स्वतंत्रता, समानता आदि के लिए संघर्ष किया जिसके फलस्वरूप नारी जीवन में नवीन परिवर्तन आया ।

समकालीन हिंदी साहित्य की मूर्धव्य कथाकार अनामिका नारी चरित्र के विविध पहलूओं को लेकर साहित्य नगर में अवतरित हुई । उनके साहित्य का प्रमुख स्वर नारी चेतना, नारी अस्मिता के इर्द-गिर्द ही घूमता है । इनका उपन्यास 'अवान्तरकथा ' इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपन्यास है ।

अनामिका के उपन्यास 'अवान्तरकथा' में आनेवाले नारी पात्र अपने आप में सबल, धैर्यशाली, शिक्षित, सेवामय, रूढ़िवादी और कर्तव्यपरायण है । इस उपन्यास में आने वाले नारी पात्र है—नन्ना, तरु, दीक्षा, अरुन्धती, शोषित शांता (बालिका), विद्योत्तमा, वसुंधरा, जलेबा बुआ ।

इस उपन्यास में चित्रित स्त्री पात्र आधुनिक शिक्षित नारी पात्र है । सभी नारी पात्र स्वतंत्रता से जीवन में अपना निर्णय स्वयं लेती हुई दिखाई देती है ।

शिक्षित नारी: 'नन्ना' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है । पेशा से डॉक्टर नाम है, नन्ना । "नन्ना! न-न करते ही तो पूरा जीवन बीत गया था। सारे नियम, सारे आचार-विचार काई की तरह काछ कर वे अपने ढंग से यह वैतरणी तैरती गयी थी ।"[5]

नन्ना शिक्षित, विवाहित, डॉक्टरी करने के साथ वह अपने बच्चे ही नहीं बल्कि निम्न-वर्ग के बच्चों के प्रति प्रेम-सहानुभूति तथा समानता का भाव दिखाती है वह ऊँच-नीच का भेद मिटती है । लेखिका ने इस विचार के साथ समाज में एकता का भाव लाने का प्रयास किया है।

शिक्षित स्त्री वैयक्तिक स्वतंत्रता चाहती है और पति को अपनी इच्छा और भावनाओं को भी समझती है ।

पति दीननाथ जब नन्ना को डॉक्टरी का काम छोड़कर अपने साथ चलने को कहता है तो नन्ना कहती है "दूर रहने से, हो सकता है, सौहार्द भी बढ़े ।.....एक मौका तो दो एक प्रयोग करने दो । नहीं चला तो वापस आ जाऊँगी । तुम्हारी उदारता के गुण गाऊँगी वरना लड़ते झींकते ही जिंदगी कट जाएगी ।"[6] इस पात्र के जरिए यह दर्शाया गया है कि पढ़ी-लिखी शिक्षित स्त्री हमेशा सम्बन्धों को बनाये रखना तथा आत्मनिर्भर होकर जीना चाहती है ।

इस उपन्यास में दीक्षा भी आधुनिक जागरूक शिक्षित नारी पात्र का प्रतिनिधित्व करती है । विवाह के उपरांत पति के ढोंगी समाज-सेवक भाव से परिचित होकर, उसके द्वारा हुए अन्याय, भ्रष्टाचार का विरोध करती है । दीक्षा पति को सुधारने का समय भी देती है और कहती है "जब तक तुम्हारा बच्चा पृथ्वी पर आता है तब तक का समय दूँगी सुधर जाओ । तब ही में तुम्हारे पास वापस लौटूँगी ।"[7] दीक्षा अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाती भी है और जिम्मेदारी स्त्री का कर्तव्य भी निभाती है । जब पति के गुंडे, हत्यारे की बेटी शांता पर अत्याचार करते है, तो दीक्षा उस लड़की का इलाज करवाती है । इस संबंध में दीक्षा पति से कहती है "तुम्हारे पाप की भागीदार मैं हूँ और इस पाप का प्रक्षालन तुम करो, न करो मैं करूँगी ही ।"[8] अर्थात् स्त्री पति को उसके दर्द, गलती और पाप का एहसास कराना चाहती है । जिम्मेदारी और आदर्श पत्नी होकर वह पति का पाप को खुद् उठाना चाहती है और पति को सही मार्ग पर लाना चाहती है । इस संदर्भ में उसका मानना है "सक्सेस बाइ हुक और बाइ क्रुक येनकेन प्रकारेण पाई हुई सफलता और मेरा दाम्पत्य दोनों में से किसी एक का वरण कर लेना ।"[9] हर पत्नी यह चाहती है कि पति हमेशा सही मार्ग पर चले और अपने जीवन में आदर्शवादी बने । इस कारण वह अपने पति को बच्चे के जन्म तक का समय देती है और उसका कहना है कि मेरे कोख में तुम्हारा बच्चा पल रहा है, तुम्हें उसके जन्म तक का समय दूँगी । दीक्षा पति को चेतावनी देती है, कि हमारे बच्चे के जन्म तक का समय है तबतक तुम्हें सुधर जाना है ।

मातृत्व का एहसास : स्त्री चाहे शोषित हो या पीड़ित उसे माँ बनने की खुशी का एहसास श्रेय ही हैं । शोषित बालिका शांता गर्भवती होने पर वह दीक्षा से कहती है "दीदी, मेरा बच्चा मत गिराओ....मेरा माँ बनने का बड़ा मन करता है....अब तो....कोई मुझसे शादी करेगा नहीं तो मैं उसीसे खेलूँगी.....तुम्हारे भी खोखा होने को है, दोनों खोखें खेलेंगे ।"[10] मातृत्व का बोध और बच्चे की चाह को हम स्त्री में देख सकते हैं, उसे यह भी मालूम नहीं है आखिर बच्चे का बाप कौन है फिर भी वह अपने गर्भ में पलते हुए नन्हे जीव को कुचलना नहीं चाहती है।

स्त्री उदारमान है यह वसुंधरा के चरित्र में व्यक्त हुआ है। वसुंधरा कहती है "आसक्ति हमेशा टुच्ची हो जरूरी तो नहीं, उदात्त और परिष्कृत गंभीर और व्यापक प्रेम इतना नायाब तो नहीं फिर लोगों को विश्वास करते-करते इतनी देर क्यों लग जाती है कि स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध विवाह के पार भी शुभ और सच्चा हो सकता है ।"[11]

समाज सुधारक और सेवा भाव: नारी हमेशा सिर्फ अपने बारे में ही नहीं सोचती है वह समाज को भी खुश रखना-देखना चाहती है । तथा शोषित-पीड़ितों को भी आश्रय देती है । यह नन्ना के माध्यम व्यक्त किया गया है । "मेरा सपना एक ऐसा घर है जहाँ परिवार और परिवार के बाहर के दोस्त-बाग, कुछ अनाथ बच्चे, बूढ़े और अकेली स्त्रियाँ साथ मिलकर रह सके....।"[12]

तरु इस एक ऐसी स्त्री पात्र है जो छोटी उम्र में ही एक स्वयंसेवी संस्थान 'आस्था' को चलाती है । ऐसी स्त्री भी है जो अपने प्रेम को बिना झिझक इज़हार करती है वह अनामय से कहती है "तो तुम्हीं क्यों नहीं ब्याह लेते मुझको? हाथ कंगन को आरसी क्या । खुद ब्याहो और देखों कि यह तरु किस तत्व की बनी हुई है, कितना आसान या कठिन है इस अनुकूलित करना ।"[13] इस वाक्यों से यह बोध होता है कि स्त्री प्रेम को स्वतंत्रता से इज़हार करती है और वह अपने व्यक्तित्व

को पुरुष के व्यक्तित्व के अनुसार बदलती है ।

उपन्यास में कामकाजी महिला की समस्या को भी उजागर किया गया है । स्त्री को नौकरी, घर-गृहस्थी, पति-बच्चे सभी का ख्याल उसे रखना पड़ता है । लेकिन पुरुष इन सब जिम्मेदारी से मुक्त होते है । स्त्री को अक्सर हर काम में पति के तानों की बौछार पड़ती है । स्त्री अगर अपने काम पर अधिक ध्यान देती है तो पति के व्यंग्य बाण इस प्रकार पड़ते हैं—"कैसा निकम्मा बच्चा तैयार हो रहा है.....यह चाय है? ये कपड़े धुले है? यही रिजल्ट लाए हैं साहब जाद ? तुम डॉक्टरनियों के ही तो मजे हैं.....प्रतिज्ञाशून्य व्यक्ति भी कैनवासिंग से तुरंत लाइम-लाइट में आज जाएगा.....सुबह का बना खाना शाम तक निगलना पड़ता है, यह घर है भला....।"[14] पति के इन तानों का कोई समझदार स्त्री उत्तर नहीं देती है तो पति का उत्तर होता है "चालू लोगों का यही रास्ता ठीक है आँख झुकाकर सब कुछ सुन लो और करो अपने मन की ।"[15] यहाँ पति को पत्नी के हर काम 'बिनीथ-डिग्निती' लगता है । पत्नी के प्रतियोगिता में भाग लेना, किसी से मिलना-गुलना वर्जित मानता है पुरुष क्योंकि पुरुष अपने स्वार्थ बुद्धि के कारण स्त्री की प्रशंसनीय गुणों को सहन नहीं कर पाता है ।

स्त्री के प्रति परम्परागत मानसिकता के कारण नारी को उसकी आज़ादी नहीं मिलती जितनी पुरुष को क्योंकि नारी को हमेशा समाज के बंधनों और भावनाओं में बाँध दिया जाता है । अनामिका ने 'नन्ना' के माध्यम से इस बात को व्यक्त किया है । नन्ना को उसकी बिदाई के समय समझाया जाता है कि "कितनी भी तेज भूख हो सबके सामने हड़बड़ा हड़बड़ा के मत खाना....कुड़-कुड़ी.....चीज मिले तो उसे दाल में डुबाकर.....खाना नहीं तो सब हँस पड़ेंगे ।"[16] अर्थात्त नारी तो स्वाद का भी आस्वादन नहीं कर सकती है उसे खाने-पीने में भी अपनी लाज-लज्जा, शर्म, मान-मर्यादा का पालन करना होता है ।

स्त्री कभी-कभी अपने विश्वसनियों पर भी शक करती है, इसका बोध अरुंधती पात्र के द्वारा होता है, वह सोचती है "·····तीन साल इस बला से दूर वे शिकागो ही रहेंगे इन तीन सालों में वे अपने पति को मान मनुहार से ऐसे बाँध लेगी कि इस नन्ना की स्मृति भी उनके मन में शेष न रह जाए।"[17] स्त्री को हमेशा पति के सखी के प्रति शंका होती है । वह शंका को अपने मन में पालती है और इसी कारण से स्त्री कभी-कभी पुरुष को अपने पल्लू में बाँधने की कोशिश करती है । जिससे पति पास होने पर भी दूर ही रहने का एहसास होता है । इस प्रकार की बातों पर स्त्री को विमर्श करना चाहिए ना की शंका, यह शंका आगे वैवाहिक जीवन का विष भी बनता है ।

विद्योत्तमा" एक ऐसी पात्र है जो हमेशा अपना घर-परिवार के बारे में सोचती है अन्य व्यक्तियों को अपने घर में आश्रय पाते देखकर बर्दाश नहीं कर पाती है। उसका मानना है "घर-घर ही होता है जहाँ सिर्फ अपने होते है परायों को आश्रय देने की क्या ज़रूरत है? इन परायों को अपने दायरे में रहना चाहिए ।"[18] यह स्त्री पढ़ी-लिखी शिक्षित आधुनिक नारी होते हुए भी स्वार्थी है जो अपना है उसे किसी से भी बाँटना नहीं चाहती है।

उपसंहार

प्रस्तुत उपन्यास में यह दर्शाया गया है कि शिक्षित और आदर्श नारी ही चेतना-शील होती है । ज्ञान और अनुभव से ही नारी सेवाभाव, वैचारिक, वैयक्तिक स्वतंत्रता, कर्त्तव्यनिष्ठा, विवेकशील भावनिर्माम होती है । वह समाज और परिवार में नीहित भेद-भाव को मिटाकर सभी को एक सूत्र में बाँधना चाहती है । दीन-दलितों, शोषितों को आश्रय देकर उनका उद्धार भी करना चाहती है । नारी पुरुष को सुधारने का मौका भी देती है "मैं अकेली रहती हूँ तो यह काँटा जरूर उसे चुभता रहेगा कि कुछ आधार-भूत जीवन मूल्यों का उसने उल्लंघन किया, इसलिए उसे यह सजा मिली....।"[19] स्त्री-पुरुष से दूर रहकर उसके किए का पश्चाताप करवाना चाहती है ताकि पुरुष अपनी मनोधारण को बदले ।

स्त्री के वैवाहिक जीवन में जब इच्छाएँ, भावनाएँ

अपूर्ण होती है तो स्त्री जीवन को नया आयाम मिलता है और वह अधिक दार्शनिक हो जाती है । यह विचार यह संकेत देता है कि वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी दोनों को अपनी इच्छाओं और भावनाओं की कद्र करना अत्यंतावश्यक है । इस प्रकार लेखिका ने स्त्री पात्रों में यह दर्शाया है कि आज नारी को विवेकशील होने के साथ-साथ सेवाभाव से भी परिपूर्ण होना चाहिए ।

संदर्भ सूची

1. दसवें दशक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चेतना-वसाणी कृष्णावंती पी., पृ. 14
2. Standard Illustrated Dictionary of the Hindi Language, Prof. R.C. Pathak, Page.no. 242
3. www.google translate
4. नारी चेतना, एक परिदृश्य-वसाणी कृष्णावंती, पृ. सं. 19
5. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, डॉ. अमर ज्योति, पृ.सं. 12
6. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर पृ. सं. 28
7. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 30
8. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 34
9. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 20 -6 है
10. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 60
11. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 54
12. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 78
13. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं.***25***
14. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली वही, पृ. सं. 54
15. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 23
16. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 87
17. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 25
18. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली वही, पृ. सं. 52
19. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली पृ. सं. 22
20. अवान्तर कथा – अनामिका –प्रकाशन किताबघर नयी दिल्ली वही, पृ. सं. 107

सहायक ग्रंथ

1. स्त्री –विमर्श डॉ.विनय कुमार पाठक – भावना प्रकाशन, दिल्ली-91
2. समकालीन हिन्दी साहित्य: संवेदना और विमर्श – डॉ. वेदप्रकाश अमिताम-अमन प्रकाशन
3. समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी- डॉ. रेखा पाटील-विध्या प्रकाशन,कानपुर
4. स्त्री विमर्श और समकालीन संदर्भ –प्रो.प्रतिभा मुदलियार –अमन प्रकाशन, कानपुर
5. समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री विमर्श– डॉ. महेंद्र रघुवंशी, विध्या प्रकाशन